उपसंहार

उपसंहार

''मृणाल पांडे के उपन्यासों में चित्रित जन-जीवन का अनुशीलन'' के अध्ययन के पश्चात निष्कर्ष के रूप में जो तथ्य सामने आए हैं उनका निचोड़ यहाँ सार रूप में प्रस्तुत है -

मृणाल पांडे : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

मृणाल पांडे जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के विवेचन-विश्लेषण के उपरान्त मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि उनका व्यक्तित्व जिज्ञासु, अध्ययनशील, हँसोड़, कलाप्रेमी, स्वाभिमानी, साहसी, परंपरा और आधुनिकता का समन्वयक, व्यक्ति-मन का चितेरा, यथार्थ का हिमायती और समाज-सुधार की आत्मीय मनोभावना से ओत-प्रोत है। मृणाल पांडे का जन्म ही सुशिक्षित परिवार में होने से परिवार-सदस्यों की प्रेरणा के कारण ही वे उच्च-शिक्षा-ग्रहण तथा विभिन्न कलाओं के विधिवत अध्ययन में सफल परिलक्षित होती हैं। शिक्षा तथा नौकरी के कारण मृणाल पांडे देश-विदेश के विभिन्न जन-जीवन से परिचित हो सकी हैं। इस अनुभव से जूड़ी घटनाओं का चित्रण उनकी रचनाओं में परिलक्षित होता है।

मृणाल पांडे का जीवन आदर्श, प्रेरक तथा प्रभावी नजर आता है। परंपरागत तथा आधुनिक मूल्यों का स्वर्णमध्य उनके आदर्श-जीवन की विशेषता है। उनके लेखन क्षेत्र की परिधि विशाल नजर आती है। उन्होंने हिंदी और अंग्रेजी भाषा के विभिन्न विधाओं में साहित्य सृजन किया है, जो सिर्फ अपने आप में एक विशेष महत्त्वपूर्ण स्थान ही नहीं रखता बल्कि पाठकों को आचार-विचार संबंधी विचार करने को प्रवृत्त करता है। बहुभाषी मृणाल पांडे रचनाकार के साथ-साथ एक सफल पत्रकार तथा निवेदिका के रूप में भी बहुचर्चित हैं। इन कार्यक्षेत्रों के कारण ही उनके अनुभव क्षेत्र की व्यापक परिधि को गहन विचारों की धार मिली हुई परिलक्षित होती है। इन्होंने पत्रकारिता तथा साहित्य सृजन में अनूठा कार्य किया है। फलत: सामाजिक निजी संस्थाओं तथा सरकार ने मृणाल पांडे को पुरस्कार तथा मानद सदस्यत्व देकर तथा पद पर नियुक्ति करके गौरवान्वित किया है। संक्षेप में कहना सही होगा कि मृणाल पांडे जी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व बहुआयामी है। उनका व्यक्तित्व नई पीढ़ी के लिए प्रेरक एवं आदर्श

प्रतीत होता है तथा कृतित्व पाठकों को जीवन जीने की नयी दृष्टि देनेवाला दृष्टिगोचर होता है।

मृणाल पांडे के उपन्यासों का परिचयात्मक विवेचन

प्रस्तुत अध्याय के विवेचन-विश्लेषण के पश्चात मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचता हूँ कि मृणाल पांडे के 'विरुद्ध' उपन्यास से लेकर 'हमका दियो परदेस' उपन्यास तक सभी उपन्यासों की विषय वस्तुओं में विविधता है। इनके उपन्यासों का प्राणतत्त्व जन-जीवन का चित्रण ही है। मृणाल पांडे के सभी उपन्यास नायिका-प्रधान हैं। सभी उपन्यासों की नायिकाएँ संघर्षशील, धैर्यनिष्ठ, कर्तव्यकठोर, जिज्ञासु, आशावादी, कर्मठ तथा जीवन-मूल्यों पर आड़िग विश्वास रखनेवाली हैं। अन्य पात्रों का चरित्र-चित्रण भी प्रभावशाली ढंग से हुआ परिलक्षित होता है। विवेच्य उपन्यासों में हर उम्र तथा वर्ग के पात्रों का चित्रण मनोविज्ञान के आधार पर हुआ नजर आता है। 'विरुद्ध' और 'पटरंगपुर पुराण' उपन्यास की शैली क्रमश: विवरणात्मक तथा कथात्मक है, तो शेष उपन्यासों की शैली आत्मकथात्मक है। विवेच्य उपन्यासों की भाषा देखकर कहना सही होगा कि मृणाल पांडे का भाषा कौशल अनूठा है। उनके सभी उपन्यासों में अंग्रेजी, अरबी, फारसी शब्दों के साथ साथ पहाड़ी लोकोक्तियों का प्रयोग भी पर्याप्त मात्रा में मिलता है। उपन्यासों के कथोपकथन बड़े मार्मिक हैं। थोड़े शब्द ही गहन विचार का वहन करते हुए दृष्टिगोचर होते हैं। मृणाल पांडे के उपन्यासों का परिवेश मैदानी तथा पहाड़ी प्रदेश है। इनके उपन्यासों में चित्रित उत्तर प्रदेश के पटरंगपुर, नैनीताल और अल्मौड़ा जैसे पहाड़ी अंचल के कस्बों का चित्रण पहाड़ी जन-जीवन के विभिन्न अंगों को उजागर करता हुआ नजर आता है, तो 'रास्तों पर भटकते हुए' उपन्यास में चित्रित दिल्ली महानगर का चित्रण महानगरीय जीवन का पर्दाफाश करता है। अंतत: कहना सही होगा कि पहाड़ी तथा मैदानी प्रदेश के जन-जीवन का चित्रण कर वहाँ की संस्कृति तथा समस्याओं से पाठकों को अवगत तथा सचेत करना ही मृणाल पांडे के उपन्यासों का मूल उद्देश्य रहा है।

विवेच्य उपन्यासों में चित्रित पहाड़ी जन-जीवन

प्रस्तुत अध्याय के विवेचन-विश्लेषण के उपरांत जो निष्कर्ष सामने आए हैं वे इस प्रकार हैं -

मृणाल पांडे के औपन्यासिक साहित्य में से 'पटरंगपुर पुराण' पहाड़ी आंचलिक उपन्यास होने के कारण इसमें पहाड़ी जन-जीवन का समूचा चित्रण मिलता है। शेष उपन्यासों में भी पहाड़ी जन-जीवन का चित्रण पर्याप्त मात्रा में मिलता है। विवेच्य उपन्यासों के पहाड़ी लोग रूढ़ि-परंपरा-प्रिय नजर आते हैं। वे लोकविश्वास पर विश्वास करते हैं। रूढ़ि-परंपरा तथा लोकविश्वास को धर्म का दृढ़ आधार दृष्टिगोचर होता है। पहाड़ियों के वस्त्राभूषण में वैविध्यता परिलक्षित होती है। लिंग, आयु तथा वर्ग के अनुसार वस्त्राभूषणता में विभिन्नता है। पहाड़ियों के खान-पान का आधार अर्थ है। उच्चवर्ग, मध्यवर्ग तथा निम्नवर्ग के लोगों के खान-पान में अंतर है। पहाड़ी लोग ललित कलाओं के प्रेमी दिखायी देते हैं और वे विभिन्न कला, खेल, मनोरंजन के साधनों में निपुण नजर आते हैं। पहाड़ी जन-जीवन में संस्कार, त्यौहार तथा उत्सव को अक्षुण्ण महत्त्व दिखायी देता है। वे उत्सव, त्यौहार तथा संस्कार कार्य धूम-धाम से मनाते हैं। पहाड़ी जन-जीवन की श्रम पर आधारित प्राचीन वर्ण-व्यवस्था लोप होती हुई परिलक्षित होती है।

पहाड़ी परिवार के पति-पत्नी संतान-प्रिय हैं। किंतु वे कर्तव्यपरायणता से ज्यादा रति-क्रीड़ा को अग्रक्रम देते हुए नजर आते हैं। पहाड़ी युवा वर्ग व्यसनाधिन, विद्रोही तथा बेकार हैं। परिवार की बहुनानियाँ आधुनिकता की अंधी हिमायती तथा प्राचीन आदर्श मूल्यों को भूली हुई परिलक्षित होती हैं। पहाड़ी परिवार के बूढ़े लोग परंपरा-प्रिय नजर आते हैं। पहाड़ी जन-जीवन में शैक्षिक जागृति हो रही है। सभी वर्ग के लोग विपन्न स्थिति में भी बच्चों को पढ़ाने की मानसिकता रखते हैं। मात्र लड़कियों के शिक्षा संदर्भ में उदासीन दृष्टिकोण दृष्टिगोचर होता है। पहाड़ी अंचल में आर्थिक विषमता नजर आती है। अमीर अधिक अमीर बन रहे हैं तो गरीब दो वक्त की रोटी की फिक्र में परिलक्षित होते हैं। स्वातंत्र्यपूर्व तथा स्वातंत्र्योत्तर काल में भी पहाड़ी जन-जीवन का पर्याप्त विकास नहीं हुआ है। विलासी, कामुक, कुटिल राजा तथा भ्रष्टाचारी, स्वार्थी राजनेताओं के कारण पहाड़ी जन-जीवन पिछड़ा हुआ दृष्टिगोचर होता है।

विवेच्य उपन्यासों में चित्रित महानगरीय जन-जीवन

प्रस्तुत अध्याय के समूचे अध्ययन के उपरान्त जो निष्कर्ष मिले हैं वे इस प्रकार हैं -

महानगर से तात्पर्य है - जो केंद्रिय तथा महत्त्वपूर्ण स्थल होता है। महानगर के प्रमाप (Criterria) देश, कालपरत्वे अलग-अलग दृष्टिगोचर होते हैं। भारत में 1 दश लक्ष से अधिक आबादी होनेवाले नगर को महानगर कहा जाता है। महानगरीय युवक एकल परिवार के पक्षधर हैं। अधिकतर पति-पत्नी में ऊपरी प्रेममय मुखौटे के पीछे ईर्ष्या और अहं परिलक्षित होता है। महानगर में आर्थिक विषमता दृष्टिगोचर होती है। एक ओर उच्चवर्गीय लोग भौतिक सुख-सुविधाओं से संपन्न हैं तो दूसरी ओर निम्न-मध्य तथा निम्नवर्गीय झोपड़ेनुमा घरों में विपन्न अवस्था में जीवन गुजारते हुए नजर आते हैं। महानगरीय समाज में अर्थ पर आधारित वर्ग संरचना है। लोग परंपरागत मूल्यों पर विश्वास न करके किसी भी तरह अमीर बनने का प्रयत्न करते हुए परिलक्षित होते हैं। महानगरीय राजनीति में सत्ताधारी तथा विरोधी दल के राजनयिक जन-विकास के बदले स्वविकास में जुटे हुए दिखायी देते हैं।

कहना सही होगा कि बढ़ती आबादी तथा प्रादयौगिकी के साथ-साथ महानगरीय जन-जीवन में विभिन्न समस्याएँ दृष्टिगोचर होती हैं। विशेषत: महानगरीय लोग सफेदपोश विलासी राजनेता तथा अधिकारियों के मनमौजीपन तथा भ्रष्टाचारी वृत्ति से अधिक त्रस्त दिखायी देते हैं। महानगर के लगभग सभी सरकारी कार्यालय के अफसर घूस के बिना काम नहीं करते, इसलिए महानगरवासी आर्थिक एवं मानसिक रूप से त्रस्त नजर आते हैं। महानगरीय जन-जीवन के अधिकतर उच्चवर्गीय लोग परस्पर थोथा-व्यवहार करते हैं, जिस कारण जन-जीवन में पारिवारिक तथा सामाजिक समस्याएँ निर्माण होती हैं। सफेदपोश गुनहगारों के कारण महानगरीय जीवन अधिक असुरक्षित दृष्टिगोचर होता है। गुंडों के पोषक सफेदपोश राजनेता हैं। परिणामत: महानगरीय जनता पुलिस व्यवस्था पर विश्वास नहीं करती बल्कि वे तनावयुक्त जीवन जीते हुए परिलक्षित होते हैं। महानगरीय जन-जीवन के विभिन्न वर्ग एवं आयु के लोग वेश्या-गमन तथा मदिरा-पान करते हैं, जिससे महानगर का सामाजिक और पारिवारिक स्वास्थ्य बिगड़ता हुआ परिलक्षित होता है। महानगरीय जन-जीवन की विभिन्न समस्याओं की जड़ लोगों का मूल्यविरहित जीवन है। पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव, यंत्रमय जीवन और अर्थ पर आधारित वर्ग संरचना के कारण महानगरीय जन-जीवन में मूल्य विघटन दृष्टिगोचर होता है। परंपरागत मूल्यों में पले व्यक्तियों को मूल्य-विरहित महानगरीय जीवन व्यथित करता है। ऐसे व्यक्ति मातृभूमि प्रेम से विव्हल नजर आते हैं। महानगरीय जन-जीवन में भीड़, आवास तथा गंदगी की

समस्या तीव्रतर दिखायी देती है। भीड़भरे महानगरीय जन-जीवन में लोग मतलब के लिए रिश्ते बनाते हुए और मतलब के लिए रिश्ते तोड़ते हुए परिलक्षित होते है, जिससे महानगरीय जन-जीवन अधिक आक्रांत बनता हुआ नजर आता है।

विवेच्य उपन्यासों में चित्रित सर्वहारा वर्ग का जीवन

प्रस्तुत अध्याय के विवेचन-विश्लेषण के पश्चात् जो निष्कर्ष सामने आए हैं, वे इस तरह हैं -

सर्वहारा वर्ग से अभिप्राय है समाज का वह निर्धन, श्रमजीवी तथा शोषित निम्नतम वर्ग, जिसकी जीविका सिर्फ श्रम के आधार पर चलती है। भारतीय समाज-जीवन में नवपाषाण युग से सर्वहारा वर्ग का उदय हुआ दृष्टिगोचर होता है। कालपरत्वे सर्वहारा वर्ग का स्वरूप बदलता रह रहा है किंतु अस्तित्व मात्र स्थायी रूप में परिलक्षित होता है।

उपन्यासकार मृणाल पांडे जी ने अपने औपन्यासिक साहित्य में सर्वहारा वर्ग के पात्र - घरकाम करनेवाले नौकर, नौकरानियाँ, वेश्या, बाल-वेटर, कुली, ताँगेवाले, रिक्शावाले, वाहक या डांडीवाले, घोड़ेवाले और ड्राइवर का पर्याप्त मात्रा में चित्रण किया है। इन सर्वहारा वर्ग के पात्रों का यथार्थ चित्रण करके उपन्यासकार ने सर्वहारा वर्ग की आर्थिक, सामाजिक, पारिवारिक और शैक्षिक दयनीय स्थिति को उद्घाटित किया है। निर्धन सर्वहारा वर्ग के लोग पारिवारिक सुख से वंचित, परिश्रमी, अभिजात्य वर्ग से शोषित, विवश, संदेहयुक्त तथा अन्याय-अत्याचार से पीड़ित जीवन जीते हुए परिलक्षित होते हैं। निर्धनता, अति कष्टप्रद कार्य, व्यसनाधिनता, मानसिक अस्वास्थ्य का परिणाम उनके शरीर पर हुआ परिलक्षित होता है। अधिकतर सर्वहारा लोगों का शरीर-स्वास्थ्य दुर्बल नजर आता है। ये इस वर्ग की मुख्य विशेषताएँ हैं।

सामान्य तथा सर्वहारा वर्ग के लोग परिश्रमी, मानवता के हिमायती तथा अभिजात्य वर्ग से शोषित, दयनीय, विवश हैं। किंतु दोनों वर्ग के कार्य स्वरूप, सुरक्षितता तथा पारिवारिक स्थिति में अंतर दिखायी देता है। सामान्य वर्ग के लोग बौद्धिक श्रम करते हुए, तो सर्वहारा वर्ग के लोग शारीरिक श्रम करते हुए नजर आते हैं। सामान्य वर्ग को सर्वहारा की तरह नौकरी की अनिश्चितता नहीं होती। सामान्य वर्ग के लोग शिक्षित होते हैं। इसलिए ही वे

सर्वहारा की अपेक्षा अधिक सुरक्षित, कम शोषित जीवन जीते हुए परिलक्षित होते हैं। सामान्य वर्ग के दाम्पत्य-जीवन में कम मात्रा में झगड़े होते हैं। वे अपने बच्चों की शिक्षा तथा भविष्य का विचार करते हुए परिलक्षित होते हैं। इसके विपरीत स्थिति सर्वहारा वर्ग के परिवारों की दिखायी देती है। संक्षेप में कहना सही होगा कि सामान्य तथा सर्वहारा वर्ग में साम्य कम और वैषम्य अधिक है। दोनों वर्गों में जिन बातों में साम्य नजर आता है, उसमें भी सूक्ष्म अंतर है। दोनों में कार्य स्वरूप को लेकर जो वैषम्य है, वही दोनों के बीच के जीवनांतर का मूल कारण दृष्टिगोचर होता है।

उपलब्धियाँ :-

1. मृणाल पांडे के औपन्यासिक साहित्य में चित्रित जन-जीवन का चित्रण लेखिका के अनुभव जगत का लेखा-जोखा है जो यथार्थ परिस्थिति का वस्तुनिष्ठ रूप प्रस्तुत करता है।
2. मृणाल पांडे के उपन्यासों में अन्य जन-जीवन की अपेक्षा प्रधानत: पहाड़ी जन-जीवन का समग्र चित्रण उपलब्ध है। पहाड़ी जन-जीवन की बारीकियों का बखूबी चित्रण, पहाड़ी जन-जीवन को स्वर्ग जैसा जीवन माननेवाले पाठकों को पहाड़ी जन-जीवन के पिछड़ेपन तथा पिछड़ेपन के कारणों से अवगत कर देता है।
3. मृणाल पांडे के उपन्यासों में चित्रित महानगरीय जन-जीवन का चित्रण वर्तमानकालीन महानगरों का पर्दाफाश करता है। महानगरीय समस्याओं की जड मूल्य-संक्रमण तथा सफेदपोश राजनयिकों का व्यवहार है जिसका स्पष्ट संकेत कर उपन्यासकार ने यथार्थ पर ऊँगली रखी है।
4. मृणाल पांडे के उपन्यासों में चित्रित सर्वहारा पात्र समूचे भारत वर्ष के सर्वहारा-वर्ग के प्रतिनिधि पात्र हैं।
5. मृणाल पांडे के उपन्यास-साहित्य में विश्व के सबसे बड़े जनतंत्रवाले भारत वर्ष की राजनीति पर किया हुआ करारा व्यंग्य पाठकों को सचेत कर विचार करने को प्रवृत्त कर देता है।
6. मृणाल पांडे के उपन्यासों की नायिकाएँ अपने लक्ष्य से विचलित न होकर आत्मिक मनोबल तथा दृढ़ साहस के बल पर जीवन में आए कठिन से कठिन समस्याओं का सामना करती

हैं। कहना गलत न होगा कि विवेच्य उपन्यासों में चित्रित नायिकाएँ नई पीढ़ी की नारियों के लिए प्रेरक एवं आदर्श हैं।

7. मृणाल पांडे का औपन्यासिक-साहित्य पाठकों को आचार-विचार संबंधी विचार करने को प्रवृत्त करता है। विवेच्य उपन्यासों की यह सबसे बड़ी उपलब्धि महसूस होती है।

अनुसंधान की नई दिशाएँ :-

मृणाल पांडे के साहित्य पर निम्नांकित विषयों को लेकर स्वतंत्र रूप से अनुसंधान किया जा सकता है -

1. ''मृणाल पांडे का उपन्यास-साहित्य : नारी विमर्श''
2. ''मृणाल पांडे के उपन्यासों में संघर्ष-चेतना : विविध आयाम''
3. ''मृणाल पांडे का उपन्यास-साहित्य : वर्गगत अनुशीलन''
4. ''मृणाल पांडे का उपन्यास-साहित्य : कथ्य एवं शिल्प''

उपर्युक्त विषय मुझे अध्ययन के पश्चात प्राप्त हुए हैं जिन पर स्वतंत्र रूप से अनुसंधान हो सकता है। यहाँ मेरे अपने शोध-विषय की भी सीमा है। भविष्य में आनेवाले शोधार्थी इन विषयों पर शोधकार्य संपन्न कर सकते हैं ।

❑❑❑❑